क्लास 26-5-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

। बच्चों को यह तो मालूम है यह बाप है। इसमें डरने की कोई बात नहीं। यह कोई साधु महात्मा नहीं है जो कोई बददुआ [illegible] होता है। तो उन से मनुष्य डरते हैं। कहां सराप न दे दे। यहां तो ऐसी कोई बात ही नहीं। बाप डरते वही हैं जो बहुत ही चंचल होते हैं। तो बापगुसा भी करते हैं। यहां तो बाप कब क्यों आद गुसा आद नहीं करते हैं। समझाते हैं अगर बाप को न याद करेंगे तो विकर्म विनाश नहीं होंगे। अपन को ही जन्म-जन्मान्तर के लिए नुकसान करेंगे। बाप तो समझानी देते हैं। आगे के लिए सुधर जाये। बाकी ऐसे नहीं कि बाप नाराज़ होते हैं। बाप तो समझाते रहते हैं अ[illegible]नान दो। एक तो बाप को याद करो और चक्र को बुधि में रखो। देवी गुण धारण करो। याद है मुख्य। बाकी सृष्टि चक्र की नालेज तो बहुत ही सहज है। वह है तीसरा आप इनकम। परन्तु उनके साथ देवी गुण भी धारण करना है। इस समय है बिल्कुलआसुरी गुथ। तो उन्हों को समझाना पड़ता है। बच्चों में आसुरी गुण होते हैं। मारने से कोई फायदा नहीं। और ही सीखते हैं। वहां सतसंग में तो सीखना नहीं होता है। यहां तो मांबाप से बच्चे सभी सीखते हैं। विकार में जाना सीखते हैं। चाल सिस्टम के कमरे बहुत छोटे2 थे। उसमें स्त्री पुरुष और बड़े2 बच्चे इकट्ठे रहते हैं। अभी बताओ बच्चों पर क्या असर पड़ता होगा। बाबा गरीबों की बात करते हैं। शाहुकारों के लिए तो जैसे यहां स्वर्ग है। उनको ज्ञान की दरकार ही नहीं। यह तो पढ़ाई है। टीचर चाहिए जो शिक्षा देवे। सुधारे। तो बाप गरीबों की बात करते हैं। कैसी हालत है। कैसे2 बच्चे खराब होते हैं। मां-बाप को सभी देखते रहते हैं। फिर छोटेपन में ही खराब हो जाते हैं। बाप की भी बच्चों पर खराब दृष्टि पड़ जाती है। तो गरीबों की हालत देखो कैसी है। बाबा कहते हैं मैं भी गरीब निवाज़ हूं। समझाता हूं देखो इस दुनियामें मनुष्यों की क्या हालत है। कोई गुरु से, कोई चाचे से, कोई बाप से, बच्चे बच्चों से खराब हो पड़ते हैं। [illegible] पूछो। तमोप्रधान दुनिया है ना। तमोप्रधान की भी हद होती है ना। 250वर्षतो लेंगे। उक दिन भी कम जास्ती नहीं। तमोप्रधान पूरा हुआ फिर बाप को आना पड़ता है। कहते हैं मैं ड्रामा अनुसार बांधायमान हूं। मुझे आना ही होता है। कितनु शुरु में गरीब आये। शाहुकार भी आये। दोनो ही इकट्ठे बैठते थे। बड़े2 [illegible] की बच्चियां भागी। कुछ भी ले न आई। कितना हंगामा हो गया। जैसे कि राकस आ गया। घर घर में रोदन [illegible]2 मच गई। (हिस्ट्री सुनाना) ड्रामामें जो होने का था सो हो गया। खयाल भी नहीं था। ऐसे होगा। बाबा खुद वन्डर खाता था क्या हो रहा है। रात रात को बालकनी से कुद कर आ जाते थे। किसको मालूम नहीं [illegible] था। वह नींद में ही सोये रहते थे। सुबह कोउठे तो देखो है नहीं। रात को 12बजे सब भाग निकली किसको पता नहीं पड़ा। कुम्भ करण के नींद में सोये हुये थे। इन्हों की हिस्ट्री बड़ी वन्डरफुल है। यह भी ड्रामा में नूं है ना। बाबा ने सभी को कह दिया चिट्ठी लिख/कर ले आओ हम ज्ञानामृत पीने जाते हैं। उनके पति लोग विलायत से आये। भूखे तो होते हैं ना। वह बोले विष दो। यह कहे हमने ज्ञानामृत पीया विष कैसे दे सकते हैं। इस पर इन्हों का एक गीत भी है। बड़े झगड़े हो गये। बड़े2 आदमियों की रिपोट निकली। मूत नहीं मिलता है। दादा ने इन सभी पर क्या जादू डाला है। उन्हों को थोड़े ही पता था कि इन में कौन सी शक्ति है। बोले दादा यह क्या करते हो। अरे मैं तो कुछ नहीं करता हूं। पंचायती में बुलायायह क्या कर रहे हो। यह विष नहीं देती है। बाबा बोला भगवानुवाच: काम महाशत्रु है, काम को जीतने से तुम जगतीजीत विश्व के मालिक बनेंगे। हम तो साफ यह बात बोलते थे। बड़ही गुसे से भरे हुये थे। हमने कहा क्रोध महाशत्रु है अगर क्रोध करेंगे तो हम चले जावेंगे। थोड़ा देखा आवाज़ शुरु करते हैं एकदम चला गया। कर तो कुछ नहीं सकते हैं ना। यह भी लिखा हुआ है लाखा भवन को आग लगाई। जब कुछ हंगामा होता था तो बाबा वहां होता था। बहुत कर के चला जाता था। फिर पासलेट आद ले आते थे। बहुत हल्ला करने लगे दादा कहां है। दादा तो था नहीं। धणी ही नहीं तो आग कैसे लगावेंगे। उल्टी सुल्टी बातें कितनी बनाई हैं। दादा जेलगया यह हुआ

और बाप और दादा दोनो ही इकट्ठे वह जेल में कैसे जा सकते। अखबारों में ऐसी2 वाहयात बातें लिखते थे जो बात मत पूछो। जैसे कि चर्चे लिखते थे यहां अन्दर रोज एक बच्चा पैदा होता है वह फिर खड्डे में डाल देते हैं। ऐसे बातें अखबारों में डालते थे। बाबा वन्डर खाते थे। एक बार वह खंडिदा देखो भी तो सही। तो यह है सभी वन्डरफुल बातें। अमेरीका से भी अखबर में निकला था कि भारत में एकजवाहरी पैदा हुआ है जिनको 16108 रानियां चाहिए। उस समय हमारे सतसंग में 400 थे। तो लिखा उनको तो 400 मिल गई हैं.... अभी बाबा को तो कुछ भी कर नहीं सकते थे। यह कहे हमने थोड़े ही भगाया। यह तो आपे ही भागी हैं। बड़ी वन्डरफुल खेल है। इसको कहते हैं चरित्र। शास्त्रों में फिर कृष्ण के चरित्र लिख दिया है। है कुछ भी नहीं। कृष्ण की तो बात हो न सके। तो यह भी सभी ड्रामा में गूंथ है। नाटक में भी यह होता है ना। हंसा कुड्डी आद2। यहतो दोनो बाप कहते हैं। हम ने कुछ नहीं किया। यह तो ड्रामा का खेल चलरहा है। छोटे बच्चे आगये कोई तो गोद में ले आई। कोई पेट में भी ले आई। अभी तुम कितने बड़े हो गये हो। बच्चों के नाम ले आये। फिर जो उन से भाग गये उनका वह नाम तो है नहीं। फिर पुराना नाम शुरु हो गया। इसलिए ब्राहमणों की माला होती नहीं। माला भक्त लोगफरते हैं। कलियुग में मालाएं हैं। संगमयुग पर माला है नहीं। किसी पास भी नहीं हैं। कलियुग में है। सतयुग में भी माला होती नहीं। तुम्हारे पास भी कुछ नहीं हैं। पहले माला फेरते थे। अभी तुम हाथ भी नहीं प्रश्क लगाते हो। तुम तो माला के दाने बनते हो। वहां भक्ति होती नहीं। यह नालेज है समझने को। यह है ही सेकण्ड की नालेज। फिर उनको कहते ज्ञान का सागर है। सारासागर मस कलमे बनाओ जंगल को कलम बनाओ तो भीपूरा हो न सके। और फिर है भी सेकण्ड की बात। अल्फ को जान गये तो वे बादशाही जरूर मिलनी चाहिए। तो वह अवस्था में जमाने वा पतित से पावन बनने मेहनत है। बाप कहते हैं अपन को आत्मा समझ कर मुझ बेहद के बाप को याद करो। इसमें है मेहनत। तदबीर कराने वाला टीचर तो है परन्तु किसकी तकदीर में नहीं है तो टीचर भी क्या करे। टीचर तो पढ़ायेंगे। यह तो बच्चे समझते हैं नही रिश्वत लेकर पास कर देंगे। यह तो बच्चे समझते हैं यह बाप दादा दोनो इकट्ठे हैं। ढेर बच्चों की चिट्ठियां आती है बाप दादा के नाम परशिव बाबा केअर ऑफ ब्रहमा बाबा। बाप से वर्सा लेते हो इन दादा द्वारा। त्रिमूर्ति में भी है ब्रहमा द्वारा स्थापना। ब्रहमा शिव को क्रियटर नहीं कहेंगे। बेहद का क्रियटर तो वह बाप ही हैं। प्रजापिता ब्रहमा भी बेहद का हो गया ना। प्रजापिता ब्रहमा तो बहुत प्रजा हो जावेगी। सभीकहते हैं ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। ब्राहमणों का है बाप है ना। चोटी है ब्राहमण। फिर सिजरा बनता है। पहले ग्रेट2 ग्रैन्ड फादर। शिव बाबा को ग्रेट2 ग्रैन्डफादर नहीं कहेंगे। वह तो सभी आत्माओं का हो गया। आत्माएं सभी भाई2 हैं। फिर बहन भाई होते हैं। बेहद के सिजरे का प्रजापिता ब्रहमा हो गया। जैसे बरादरी का सिजरा होता है ना। यह है बेहद का सिजरा। आदम और बीबी। एडव ईयु किसको कहते हैं। ब्रहमा सरस्वती कोकहेंगे। अभी सिजरा तो बहुत बड़ा हो गया। झाड़ सारा जड़-जड़ीभूत हो गया है फिर नया चाहिए। इसको कहा जाता है वैराईटी धर्मों का झाड़। वैराईटी है फिचर्स का सिजरा। एक= एक न मिले दूसरे से। हरेक के एक्टिविटी का पार्ट एक न मिले दूसरे से। यह बहुत गुह्य बातें हैं। छोटे बुधि वाले तो समझ न सके। बहुत ही मुश्किल है। हम आत्मा छोटी बिन्दी हैं। परमपिता परमात्मा भी बिन्दी है। यहां बाजु=में= बाजु में आकर बैठते हैं। आत्माएं छोटी बड़ी नहीं होती है। बापदादा इन दोनो का इकट्ठा पार्ट बड़ा ही वन्डर फुल है। मैं अपन को सुधारने लिए मेहनत भी करता हूं। श्रीमत पर भी चलता हूं। आज बाबा ने स्टानी ड्रील भी सिखाई। नालेज भी सुनाई। बच्चों कोसावधान भी किया गफलत न करो। उल्टा सुल्टा बोलना भी नहीं शान्त में बाप को याद करो। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों को स्टानी बाप व दादा का याद प्यार गुडमार्निंग स्टानी बच्चों को स्टानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

*:::***:::*